ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान
बिसवाँ सीतापुर

-- चेतावनी –

है प्रेत योनि में जीव फंसा, कैसे तुम मोक्ष दिलावोगे !

दोनों आँखों से अंधा है, आँखें कैसे दिलवावोगे !!

भवसागर, चौरासी में जीव फंसा, कैसे तुम मुक्त करावोगे !

है देंही सात में जीव फंसा, विदेंही कैसे बनवावोगे !!

पाँच तत्व में जीव फंसा, कैसे अतत्व करवावोगे !

नर रूप में जीव है भटक रहा, नारायण कैसे बनवावोगे !!

है धर्म, कर्म में जीव फंसा, सन्मुख कैसे करवावोगे !

जीव भटकता परिधि पर है, कैसे तुम केन्द्र पर लावोगे !!

घट के पर्दों में जीव फंसा, पर्दे कैसे खुलवावोगे !

घट के पर्दे सब माया के हैं, मर्म यह कैसे पावोगे !!

संचालन जीव का मन से है, आत्मा से कैसे करवावोगे !

शरणागति, सन्मुख हुए नही, आत्मा को कैसे पावोगे !!

मन भी तो तेरा कागा है, कैसे तुम हंस बनावोगे !

बुद्धि कुमति है, सुमति नही, कैसे तुम सुमति बनावोगे !!

धार है मन की नीचे को, त्रिवेणी कैसे बनवावोगे !

मन भी गतिमान तुम्हारा है, कैसे तुम शून्य बनावोगे !!

तीन ताप का असर है मन पर, कैसे इनसे बच पावोगे !

मानस रोग भी मन के ही है, परिवर्तन कैसे करवावोगे !!

कोटिन जन्मों के कर्म है मन पर, कैसे उनसे बच पावोगे !

हर समय कर्म करता मन है, कैसे अकर्म गति पावोगे !!

सद्गुरु को केवल खोजे मन, शरणागति सन्मुख होना है !

मन और जीव तुरत ही बदले, अद्वैत आत्मा होना है !!

- गीता सार –

*** केवल मन को आत्मा के सन्मुख कर देने से निम्न परिवर्तन स्वतः ही हो जाते है-**

1. सारथी परिवर्तन :-

यह मन है इस रथ का सारथी, इसको चाहे जिधर ले जाये !

इन्द्रियाँ हैं इस रथ के घोड़े, इन्द्रियों को विषयों में यह लगाये !!

मन अर्जुन है, कृष्ण आत्मा, ज्ञान आत्मा का यदि पाये !

स्वयं आत्मा सारथी बनकर, इस रथ को वह स्वयं चलाये !!

2. मन में परिवर्तन:-

सभी गती को पार करे मन, तुरतै गति विदेह की पावै !

कौवा से हँस होय मन तुरत ही, कुमति भी तुरत सुमति ह्वै जावै !!

तीन ताप और मानस रोग का, कोई असर न मन पर आवै !

कर्म, अकर्म सभी होकर के, भवसागर, चौरासी कटि जावै !!

मन हो शून्य सुरत हो स्थिर, तुरत ही मन सन्मुख ह्वै जावै !

चित्त की वृत्ति निरोध पूर्ण हो, मै पद तुरत पार ह्वै जावै !!

मन की धार तुरत ही पलटे, आतमघट भी प्रकट ह्वै जावै !

माया व्यापि सके नहिं मन में, मायाधीस तुरत बनि जावै !!

3. जीव में परिवर्तन:-

प्रेतयोनि से जीव मुक्त हो, दृष्टि भी सत और विवेक की पावै !

परिधि से जीव मुक्त तुरतै ह्वै, किलिया, धुरी केन्द्र पर आवै !!

वायु तत्व से जीव मुक्त ह्वै, आतम रूप अतत्व ह्वै जावै !

बूँद रूप से जीव बदलकर, पूर्ण क्षीर सिंधु बनि जावै !!

नर से नारायण, जीव से पीव, बदलकर जीव परमपद पावै !

देंही सातों पार करे यह, विदेही अवस्था तुरत ह्वै जावै !!

दृष्टि विमुख से सन्मुख होकर, जीव अनन्य सहज ह्वै जावै !

जीव और आतम दोनों एक हों, जीव का लक्ष्य पूर्ण ह्वै जावै !!

धार से धार मिले तुरतै, त्रिवेणी तुरत ही प्रकट ह्वै जावै !

जीव को आतमज्ञान मिले, तब सत्यनाम सतगुरु पद पावै !!

धर्म, कर्म सब छोड़ि कै जीव, शरणागत आतम ह्वै जावै !

आतमज्ञान मिले जब जीव को, जीव परमपद तुरत ही पावै !!

सुरेशादयाल

ब्रम्हज्ञान योग संस्थान मोचकला

बिसवाँ सीतापुर (उ० प्र०)

सम्पर्क सूत्र - 9984257903